Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 25-10-2021, Accepted: 10-11-2021, Published: 25-11-2021
Volume 2, Issue 2, 2021, Page No. 61-63

सामाजिक कुप्रथाओं के संबंध में गांधीवादी विचारों का अनुशीलन

पवन कुमार तिवारी
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
सामाजिक कुप्रथाओं सती प्रथा, दहेज प्रथा और स्त्री पुरुष असमानता पर गाँधी जी ने अपने विचारों द्वारा कड़ा विरोध जताया। गाँधीजी का कहना था कि जरूरी नही है कि जो प्रथायें किन्हीं भ्रान्तियों के कारण शुरू हुई और आज तक समाज में एक काले साये की तरह परछाई बनकर छायी हुई है वह भविष्य में बनी रहनी चाहिए हमें इस पर विचार करने की जरूरत है और जो समाज में विसंगतियाँ फैल रही हैं उसे रोकने की जरूरत है हमें उन्हीं प्रथाओं का अनुकरण करना चाहिए जो समाज के लिए लाभकारी व कल्याणकारी हो उसके अतिरिक्त जो समाज में असमानता पैदा कर रही हो, बुराइयाँ पैदा कर रही हों, विभेद फैला रही हों उसका त्याग तुरन्त करना चाहिए क्योंकि हम मानव हैं पशु नहीं और हमारे अन्दर सोचने की शक्ति और समझ है जिसके कारण सही और गलत का निर्णय हम कर सकते हैं उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जिस समाज में नारी का सम्मान नहीं, विधवा के साथ सहानुभूति नहीं, वह समाज सभ्य समाज की श्रेणी में नहीं आता उस समाज को पुर्नमूल्यांकन की जरूरत है अतएव हमें एक साथ मिलकर इन कुरीतियों का तिरस्कार करना चाहिए।

मूल शब्दः मानव आदिकाल, वशीभूत, सारी, प्रागैतिहासिक

प्रस्तावना

समाज का कल्याण एवं विकास तभी होगा जब बड़ी–बड़ी गाड़ियों से चलने वाले व्यक्तियों को इस बात का एहसास होगा कि किस तरह हमारे जैसे ही प्राणी जीवन यापन कर रहे हैं उन्होंने देश को एक समान स्थिति में देखा है उन्होंने कभी भी समाज को अलग–अलग रूपों में नहीं पाया। इसके लिए उन्होंने मलिन बस्तियों में जाकर पयखाने की सफाई से लेकर अन्य छोटे–छोटे कार्यों को अपने हाथों से सम्पन्न किया और लोगों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया और इस बात का एहसास दिलाया कि जिस वर्ग को आप समाज की विकास के मुख्य धारा से अलग रखकर देख रहे हैं अगर उन्हें हम अपने साथ मिलाकर रखेंगे तो इसके सकारात्मक परिणाम सामने आयेंगे। गाँधी जी ने समाज को एक सूत्र में रखकर आगे बढ़ने के लिए कई सारे क्रान्तिकारी कदम उठाये हैं गाँधी जी ने स्वदेशी की भावना को अपनाने पर विशेष बल दिया था उसके पीछे उनका महत्वपूर्ण उद्देश्य छिपा हुआ था उनका कहना था कि स्वदेशी की भावना के दो सकारात्मक परिणाम सामने आयेंगे प्रथम लोगों में स्वालम्बन की भावना का विकास होगा और दूसरा लोगों में आपसी भाई–चारा का विकास पनपेगा इसके लिए उन्होंने कुटीर उद्योग, हथकरघा आदि के बढ़ावे की बात कही है। गाँधी जी ने एक आदर्श समाज में रह रहे लोगों से अच्छी संस्कृति, धर्म एवं नैतिक मूल्यों के पालन के साथ–साथ मानव को मदिरा एवं मद्य पदार्थों से दूर रहने की सख्त हिदायत दी है उन्होंने इस बात को बताया है कि मद्यपान व्यक्ति की सोचने की शक्ति को क्षीण कर देता है और वह फिर एकाग्रचित्त होकर किसी भी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता है जिससे वह धीरे–धीरे समाज की मुख्य धारा से कट जाता है इसलिए गाँधी जी ने इसे पूरी तरह से प्रतिबन्धित करने की वकालत की है। उनका कहना था कि मदिरा सेवन व्यक्ति के अन्दर आसुरी प्रवृत्तियों को पनपने में मदद करता है जिससे कि व्यक्ति सही गलत, उचित अनुचित, हिंसा और अहिंसा में भेद नहीं कर पाता और सत्य की राह से भटक जाता है इसकी वकालत करते हुए गाँधी जी ने राजा और सरकार को इस बात के लिए आगाह किया था कि हो सके तो अपने राज्य के कुशल संचालन के लिए मदिरा उपयोग पर निषेध लागू करे जिससे कि किसी भी व्यक्ति को इन बुराइयों में लिप्त होने का मौका न मिले।

इन उपरोक्त सामाजिक कुप्रथाओं के अलावा गाँधी जी ने सती प्रथा, दहेज प्रथा और स्त्री पुरुष असमानता पर अपने विचारों द्वारा कड़ा विरोध जताया। गाँधीजी का कहना था कि जरूरी नही है कि जो प्रथायें किन्हीं भ्रान्तियों के कारण शुरू हुई और आज तक समाज में एक काले साये की तरह परछाई बनकर छायी हुई है वह भविष्य में बनी रहनी चाहिए हमें इस पर विचार करने की जरूरत है और जो समाज में विसंगतियाँ फैल रही हैं उसे रोकने की जरूरत है हमें उन्हीं प्रथाओं का अनुकरण करना चाहिए जो समाज के लिए लाभकारी व कल्याणकारी हो उसके अतिरिक्त जो समाज में असमानता पैदा कर रही हो, बुराइयाँ पैदा कर रही हों, विभेद फैला रही हों उसका त्याग तुरन्त करना चाहिए क्योंकि हम मानव हैं पशु नहीं और हमारे अन्दर सोचने की शक्ति और समझ है जिसके कारण सही और गलत का निर्णय हम कर सकते हैं उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जिस समाज में नारी का सम्मान नहीं, विधवा के साथ सहानुभूति नहीं, वह समाज सभ्य समाज की श्रेणी में नहीं आता उस समाज को पुर्नमूल्यांकन की जरूरत है अतएव हमें एक साथ मिलकर इन कुरीतियों का तिरस्कार करना चाहिए। तभी जाकर कोई भी समाज एक समृद्ध एवं स्वस्थ राष्ट्र की कल्पना कर सकता है जिसमें समाज के प्रत्येक नागरिक की सहभागिता अनिवार्य है।[1]

बिना सम्पूर्ण एवं शत प्रतिशत सहभागिता के कोई भी स्वस्थ एवं सुदृढ़ राष्ट्र की कल्पना एक बेमानी सिद्ध होगी और हम शत प्रतिशत सहभागिता के माध्यम से सामाजिक बुराइयों को भी हटा सकते हैं। गाँधी जी ने सामाजिक सोपान की व्याख्या करते हुए इस बात पर बल दिया कि समाज की समानता व स्थापना में व्यक्ति की अभिव्यक्ति व भाषा की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है उनका कहना था कि मुनष्य को जबरन किसी भी भाषा को बोलने का दबाव नहीं डाला जा सकता है

और न ही उसकी प्रतिभा का ऑकलन चार शब्द अंग्रेजी बोलने से किया जा सकता है इसके लिए व्यक्ति पूर्णरूपेण स्वतंत्र है। भाषा जनमानस का आन्तरिक भाव होती है जिसमें उसका स्नेह छिपा होता है।

उनका कहना था कि भाषा मानव की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है जिसके द्वारा वह संवाद करता है संवाद लोगों को आपस में जोड़ती है, संवाद लोगों की सामाजिक एकता का प्रतीक होती है गाँधी जी का कहना था कि हमें सदैव अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए क्योंकि यह हमारी मातृभाषा है हमें दूसरों की संस्कृति और उसकी भाषा को अपनाने से बचना चाहिए और अपनी भाषा के महत्व को समझना चाहिए। गाँधी जी ने हिन्दी भाषा के महत्व को समझाते हुए कहा था कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है। आज भी हमारे देश की 75 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रह रही है जहाँ की बोलचाल की भाषा हिन्दी है गाँधी जी ने क्षेत्रीय भाषा का भी समर्थन किया था और इस बात पर विचार प्रकट करते हुए उन्होंने कहा था कि हमें अपनी क्षेत्रीय भाषा के महत्व और उसकी महत्ता को समझना चाहिए परन्तु भाषा को लेकर आपसी मतभेद नहीं होना चाहिए भारतवर्ष विविधताओं का देश है जहाँ पर प्रत्येक 3 मील के बाद भाषा परिवर्तन की परछाई देखी जा सकती है और भाषा एवं बोलचाल में भिन्नता देखी जा सकती है।[2]

हमें किसी भी क्षेत्रीय भाषा का अपमान नहीं करना चाहिए क्योंकि हम एक राष्ट्र के निवासी हैं गाँधी जी ने इसको दोहराते हुए कहा कि जब मैं अपने कार्य को हिन्दी और अपनी क्षेत्रीय भाषा गुजराती में करता हूँ तो मुझे आत्मआनन्द की प्राप्ति होती है लेकिन इसका कहीं यह तात्पर्य नहीं है कि आप दूसरी भाषाओं को सीखने में अपनी रुचि नहीं दिखायें हमें हर भाषा का सम्मान करना चाहिए क्योंकि जब तक आप प्रत्येक भाषा को समझने में अपनी रुचि नहीं दिखायेंगे तब तक आप तुलनात्मक स्थिति में नहीं होंगे कि किस भाषा का क्या महत्व है। गाँधी जी ने इस बात पर जोर दिया कि हिन्दी हिन्दुस्तान की एक ऐसी भाषा है जिसे भारतवर्ष के अधिकांश हिस्सों में हिन्दी प्रमुखता से बोली जाती है और यह एक सरल और मृदु भाषा है इसलिए हमें इसे अपनी मातृभाषा के रूप में स्वीकार करने में तनिक भी गुरेज नहीं करना चाहिए और अपने सारे कार्य सरकारी या व्यक्तिगत हिन्दी में ही करना चाहिए जिससे हमारी सामाजिक शक्ति और आपसी सद्भाव में वृद्धि हो। इस बात का हमें ख्याल रखना चाहिए और अपनी भाषा का सदैव हमें सम्मान करना चाहिए।गाँधी जी ने अपने सामाजिक विचारों का उल्लेख करते हुए इस बात पर प्रकाश डाला है कि समाज का वही स्वरूप उत्तम है जहाँ पर सामाजिक समानता हो, समाज में रहने वाला प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक वर्ग एक समान दृष्टि से देखा जाय वही एक अच्छे समाज की पहचान है। समाज में ऊँच–नीच, वर्ग–विभेद, शिक्षित–अशिक्षित, नारी–पुरुष आदि में विभेद नहीं होना चाहिए। समाज में सभी को समान अधिकार है और सभी को समाज के प्रत्येक उपयोगी जरूरतों को पूरा करने का अधिकार है, हम उनमें आपस में विभेद नहीं कर सकते। समाज का तात्पर्य ही यही है कि सम अधिकार। उन्होंने उन सामाजिक व्यवस्थाओं पर तगड़ा प्रहार किया जो कि समाज को अलग–अलग वर्गों में विभक्त करता है ऐसा समाज, समाज कहलाने योग्य नहीं है।[3]

गॉधी जी ने कभी भी ऊँच–नीच, जाति–पाँत और गरीब–अमीर में भेदभाव नहीं किया। उन्होंने समस्त प्राणी को एक कुटुम्ब के रूप में माना और उनके जनकल्याण के लिए संघर्ष किया उन्होंने अपनी पारिवारिक आवश्यकताओं की अपेक्षा समाज के कल्याण को प्राथमिकता प्रदान की है, जीवन पर्यन्त उनकी सेवा में लगे रहे उन्होंने सामाजिक असमानता को राष्ट्र के विकास में एक बहुत बड़ी बाधा माना है और इसको दूर करने की सिफारिश की। इसके लिए उन्होंने समाज को कई सारे विकल्प सुझाये जिनके माध्यम से समाज इन सामाजिक असमानता से अपने आपको बचाकर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है।[4]

गाँधी के सामाजिक विचारों में अश्पृश्यता सम्बन्धी विचारों का विशिष्ट महत्व है उनका विचार है कि समाज में ऐसे शब्दों की कोई जगह नहीं है। हमारा समाज एक लोकतान्त्रिक समाज है जहाँ पर सबको रहने और जीने का समान अधिकार है उन्होंने मैला उठाने वाले, सेवा करने वाले, कपड़ा साफ करने वाले आदि को गले लगाया और उनको समाज की मुख्य धारा से जोड़ने की बात कही। उन्होंने इस बात पर प्रमुखता से जोर दिया कि जब तक समाज में रहने वाले मजदूर वर्ग, गरीब वर्ग आदि को उन्नति के पथ पर चलने की बात नहीं होगी तब तक समाज में समता नहीं होगी। हरिजन शब्द की व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया कि हरिजन का तात्पर्य हरि अर्थात विष्णु के प्रिय होने की बात कही और उन्हें समाज में समान अधिकार मिलने की बात बतायी उनके समाज में योगदान और उनकी तरक्की के लिए उन्होंने हरिजन सेवक समाज की स्थापन कर डाली जो कि निम्न वर्ग के लिए एक मील का पत्थर साबित हुई ।[5]

उन्होंने मैला ढुलाई मे लगे हुए लोगों को गले लगाते हुए कहा कि क्या व्यक्ति अपनी शौच क्रिया नहीं करता और जब वह स्वयं अपनी शौच क्रिया करता है तो फिर उन लोगों स कैसा भेदभाव जो आपकी सेवा में तत्परता से लगे हुए हैं यह एक बहुत बड़ी सामाजिक विडम्बना है कि एक ही समाज में इतनी बड़ी विभिन्नता देखने को मिल रही है इसके अलावा उन्होंने कुष्ठ रोगियों एवं कुछ अन्य गम्भीर बीमारियों के मरीज को सेवा और प्रेम के माध्यम से करने को सबसे बड़ा धर्म बताया और कहा कि जनमानस को पूजापाठ के साथ–साथ व्यक्ति को इन सारे सामाजिक कर्तव्यों की तरफ भी ध्यान देना चाहिए और उसमें जाकर हाथ बंटाना चाहिए गाँधी जी द्वारा उठाए गये उन्हीं ज्वलन्त विषयों का ही असर है कि आज सरकार और प्रशासन इन तबके के लोगों की स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक विकास के लिए चिन्तित है और उनके विकास के लिए लगातार प्रयास कर रही है और आज उन्हीं के प्रयासों का परिणाम है कि ये वर्ग आज समाज की मुख्य धारा में अपने आपको जुड़ा पा रहे हैं।

अस्पृश्यता पर प्रहार करते हुए गाँधी जी ने कहा था कि जब हमें ईश्वर वहाँ से एक रूप और रंग एक शारीरिक रचना के सापेक्ष यहाँ भेजता है तो समाज को इस बात का अधिकार किसने प्रदान किया कि वह समाज में रह रहे लोगों में आपसी विभाजन कर तमाम वर्ग बनायें यह केवल हमारी तुच्छ मानसिकता का परिणाम है और इसे बदलने की जरूरत है तब जाकर हम इस असामाजिक कलंक से अपने आपको बचा सकते हैं।[6]

गाँधी जी द्वारा बताये गये सामाजिक विचारों का ही परिणाम है कि आज सरकारों ने बहुत सारी ऐसी कल्याणकारी योजनाओं को संचालित कर रही है जो कि समाज के गरीब, निम्न और शोषित वर्ग के लिए है, इनमें रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों को पूरी तरह से संरक्षित किया गया है आज समाज का गरीब वर्ग इन योजनाओं का फायदा उठा रहा है और अपने आपको समाज के मुख्यधारा में शामिल होता करता नजर आ रहा है इसके अलावा इन वर्गों के लिए आरक्षण, वित्तीय सहायता इत्यादि के रूप में लोगों को फायदा पहुँचाया जा रहा है जिसका सकारात्मक परिणाम आज समूचे देश में प्रतिबिम्बित हो रहा है। गाँधी जी के विचारों का ही असर है कि आज हरिजन अपने आपको हरिजन बताने में फख्रमहसूस कर रहा है निष्कर्षतः हम इस परिणाम पर पहुॅचते हैं कि गॉधी जी द्वारा बतायी गयी सामाजिक विचारधारा राष्ट्र को समानता के पथ पर अग्रसर करेगी और जनमानस को समरसता से रहने का अवसर प्रदान करेगी।

गाँधी जी चाहते थे कि समाज की संरचना उर्ध्वाधर के विपरीत क्षैतजीय होनी चाहिए जिसमें समाज का गरीब और अमीर दोनों व्यक्ति एक ही जगह पर आकर ठहरें। हमें समाज को ऐसी शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जिसमें समाज का प्रत्येक व्यक्ति मलिन बस्तियों में भी सफाई करने से न कतराये उसके अन्दर एक ऐसी सच्ची भावना का विकास होना

चाहिए जो जरूरत पड़ने पर हरिजन मलिन बस्ती में रहकर उनके साथ उनके कार्यों में हाथ बॅटाये और इस बात का अनुभव करे कि कैसे समाज में निम्न वर्ग अपने जीवन को व्यतीत कर रहा है।

गाँधी जी का कहना था कि लोगों को अपने हाथों से सिले और बुने हुए वस्त्रों का प्रयोग करना चाहिए जिसके कारण उनमें स्वावलम्बन के साथ–साथ आर्थिक स्थिति में भी बदलाव आयेगा इसके लिए उन्होंनें लोगों से चरखे चलाने की अपील की थी उनका कहना था कि चरखा हमारे समाज का प्रतीक है और हमें शान्ति और एकता का संदेश पढ़ाता है जिसके माध्यम से हम लोगों में समानता की भावना का विकास करने में सफल होंगे। गाँधी का समाजवाद एक डोरी में बंधा था जिसमें अमीर–गरीब, ऊँच–नीच जैसे किसी भी शब्द की कोई जगह नहीं थी, वह पूर्ण रूपेण समतावादी थी।[7]

गाँधी जी ने अपने विचारों में इस बात पर विशेष जोर दिया था कि अगर हमें समाज को वास्तव में एक समतामूलक अवस्था में लाकर खड़ा करना है तो उसके लिए हमें सर्वप्रथम शिक्षा की आवश्यकता और उसके महत्व को महत्वपूर्ण स्थान देना पड़ेगा क्योंकि जब तक हम लोगों को शिक्षित नहीं करेंगे तब तक हम समाज के सकारात्मक और नकारात्मक पहलू को लोगों को ठीक से नहीं समझा पायेंगे और इसकी शुरुआत हमें बाल्यावस्था से ही सर्वप्रथम प्रारम्भ करनी पड़ेगी, क्योंकि यही बालक आगे चलकर समाज के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। जब तक हम उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं देंगे कि मनुष्य एक प्राणी है जिसमें ऊॅच–नीच, अमीर–गरीब जैसी कोई बात नहीं है यह केवल समय और परिस्थितिवश होता है। तब तक हम समाज में रहने वाले प्रत्येक प्राणी को एक समान धुरी पर नहीं ला पायेंगे। गाँधी जी का सपना था कि समाज केवल एक आदर्श समाज के रूप में ही जाना और पहचाना जाय, उसमें किसी भी प्रकार का वर्गीकरण मान्य नहीं है तब जाकर हम एक खुशहाल समाज और समृद्ध आदर्श राज्य की कलपना का स्वप्न साकार कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. महात्मा गाँधी की जय, सम्पादक श्री मन्नारायण भवानी प्रसाद मिश्र, गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान सत्ता साहित्य मण्डल।
2. मेरे सपनों का भारत, गाँधी जी इन इण्डिया विलिजेज पृ0 170 आर0के0 प्रभु सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।
3. गाँधी की दृष्टि, दादा धर्माधिकारी संकलन– सम्पादन तारा धर्माधिकारी, पृ0 सं0 11, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।
4. मेरे सपनों का भारत, उल्लेख पत्र हरिजन, 9 अक्टूबर 1937, मोहन दास करम चन्द गाँधी, संग्रहकर्ता आर0के0 प्रभु सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।
5. महात्मा गाँधी की जय, सन्दर्भित– गाँधी मार्ग पर कैसे चले, लेखक युद्धवीर सिंह, पृ0 217, सम्पादक श्री मन्ननारायण भवानी प्रसाद मिश्र, गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान, सस्ता साहित्य मण्डल।
6. महात्मा गाँधी की जय सन्दर्भित गाँधी जी की व्यवहारिक आदर्शवादिता लेखक सीताचरण दीक्षित पृष्ठ 67 सम्पादक श्री मन्ननारायण भवानी प्रसाद मिश्र, गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान, सस्ता साहित्य मण्डल।
7. मेरे सपनों का भारत सन्दर्भित भारत की सांस्कृतिक विरासत, पत्र यंग इण्डिया 1 सितम्बर 1921, मोहन दास करम चन्द गाँधी संग्रहकर्ता आर0के0 प्रभु, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजधाट वाराणसी।